RNI No.: DEL/BIL/2004/14598

Youngster

YOUNGSTER • ESTABLISHED 2004 • NEW DELHI • DECEMBER 2018 • PAGES 8 • PRICE 1/- • MONTHLY BILINGUAL (HIN./ENG.)

टेक्निया इंस्टीट्यूट में महेश भट्ट के फिल्म की हुई शूटिंग

नई दिल्ली, 11 दिसंबर, 2018

रोहिणी स्थित टेक्निया इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज, दिल्ली के टेक्निया ऑडिटोरियम में रविवार को बॉलीबुड फिल्म उद्योग के प्रसिद्व फिल्म निर्देशक महेश भट्ट एक एक्टर के रूप में नजर आए। उन्होंने समृद्ध जीवन और चिंतन नामक विषय पर एक व्याख्याता का अभिनय किया है। इस दौरान डॉ. राम कैलाश गुप्ता, चेयरमैन, टेक्निया ग्रुप, ने कहा कि महेश भट्ट का टेक्निया इंस्टीट्यूट में आना आप सभी विद्यार्थियों के लिए एक अच्छी बात है। किसी फिल्म में शूट के दौरान किन–किन बातों को ध्यान में रखना होता है, उसके बारे में आज की इस शूट के दौरान देख सकेंगे और भविष्य में उसका इस्तेमाल भी कर सकते हैं। इस दौरान उन्होंने कहा कि फिल्म विधा मीडिया का एक वृहद हिस्सा है, इसके द्वारा बड़े पैमाने पर समाज को एक दिशा दी जाती है। सूचना और मनोरंजन का एक बड़ा माध्यम फिल्म है। फिल्म निर्माता कमल चंद्रा के निर्देशन में शूट हो रही इस फिल्म का नाम अभी फिलहाल ''मार्कशीट'' रखा गया है, जो विद्यार्थियों की पढाई एवं उनके भविष्य व उपलब्धियों पर आधारित है टेक्निया ऑडिटोरियम में हुई महेश भट्ट की इस फिल्म शूट कार्यक्रम को देखने के बाद फिल्म विधा में कैरियर बनाने वाले पत्रकारिता एवं जनसंचार के छात्र–छात्राओं को एक सुखद अनुभूति हुई। कार्यक्रम में आकर उन्हें किसी इनडोर शूटिंग के लिए किन तकनीकी पक्षों को ध्यान में रखना होता है और किन सामग्रियों की जरूरतें होती है, उसके बारे में फिल्म की शूटिंग के दौरान दर्शक दीर्घा में बैठकर देखने के बाद ही एहसास हुआ। इस दौरान टेक्निया इंस्टीट्यूट के छात्र–छात्राओं को भी फिल्म निर्देशक महेश भट्ट से रूबरू होने का मौका मिला। इस फिल्म में महेश भट्ट एक शिक्षक के रोल में नजर आएंगे। फिल्म निर्देशक महेश भट्ट को देखने के लिए भारी भीड़ सुबह आठ बजे से ही टेक्निया इंस्टीट्यूट के आस–पास जुटनी शुरू हो गई थी। संस्थान के

टेक्निया इंस्टीट्यूट में हुई फिल्म की शूटिंग में महेश भट्ट एक व्याख्याता के रूप में नजर आए

शेष पृष्ठ 02 पर.....

Mock Drill

पृष्ठ 01 का शेष.....

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के छात्र–छात्राओं ने महेश भट्ट के साथ फोटो सेशन भी किया। इस दौरान टेक्निया इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज के बीए (जेएमसी), बीबीए, एमबीए और एमसीए विभाग के सभी शिक्षक भी मौजूद थे

प्रस्तुतिः-

शम्भू शरण गुप्ता

Legal Rights of Women

Japanese Delegates

विश्व एड्स दिवस

विचार डॉ. जॉननाथन मन्न (एड्स ग्लोबल कार्यक्रम के निदेशक) के साथ साझा किया, जिन्होंने इस विचार को स्वीकृति दे दी और वर्ष 1988 में एक दिसंबर को विश्व एड्स दिवस के रुप में मनाना शुरु कर दिया। उनके द्वारा हर साल एक दिसम्बर को सही रुप में विश्व एड्स दिवस के रुप में मनाने का निर्णय लिया गया। उन्होंने इसे चुनाव के समय, क्रिसमस की छुट्टियों या अन्य अवकाश से दूर मनाने का निर्णय लिया। ये उस समय के दौरान मनाया जाना चाहिए जब लोग समाचार और मीडिया प्रसारण में अधिक रुचि और ध्यान दें सकें।

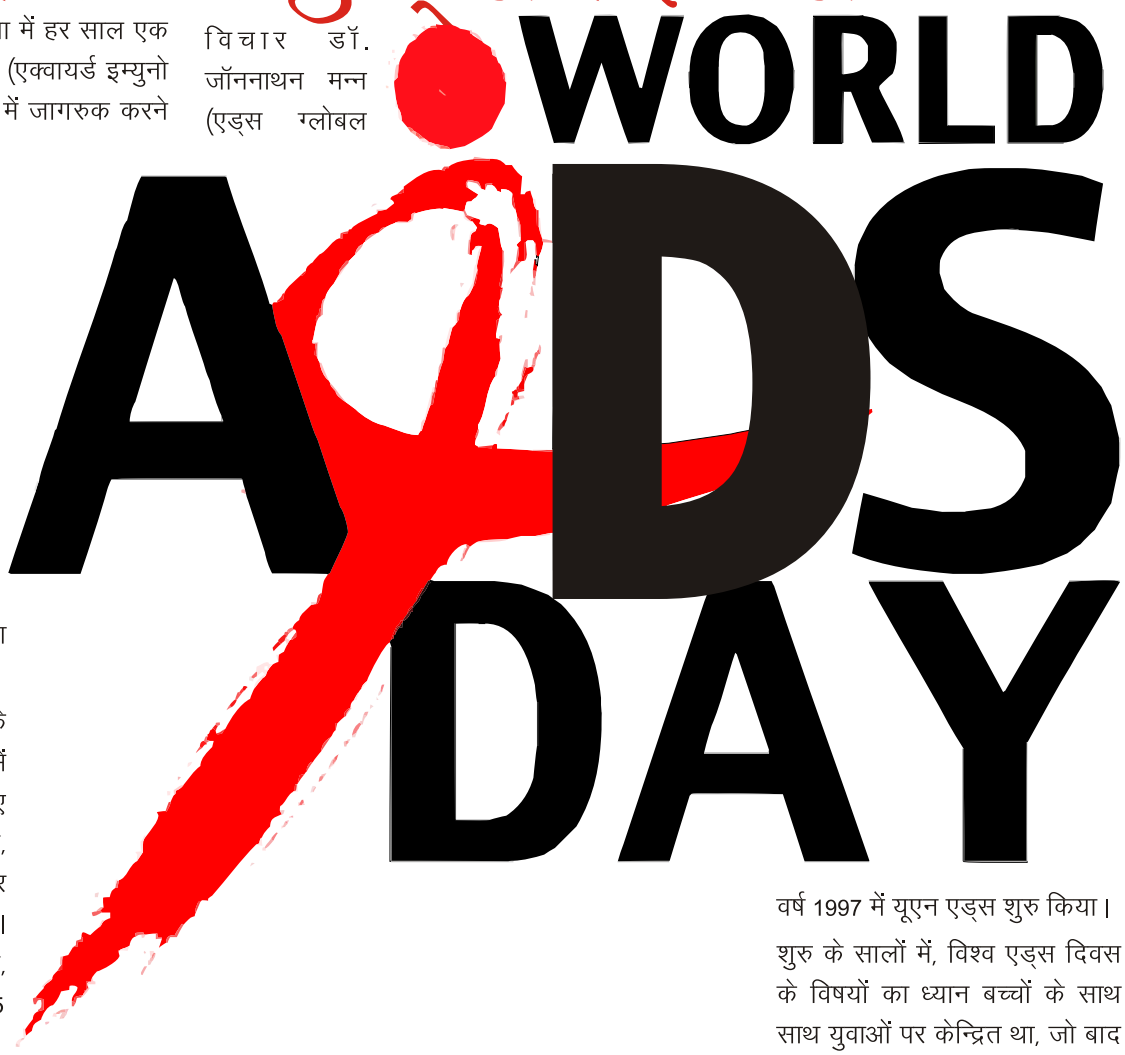

विश्व एड्स दिवस पूरी दुनिया में हर साल एक दिसम्बर को लोगों को एड्स (एक्वायर्ड इम्युनो डेफिशियेंसी सिंड्रोम) के बारे में जागरुक करने के लिये मनाया जाता है। एड्स ह्यूमन इम्यूनो डेफिशियेंसी (एचआईवी) वायरस के संक्रमण के कारण होने वाला महामारी का रोग है। यह दिन सरकारी संगठनों, गैर सरकारी संगठनों, नागरिक समाज और अन्य स्वास्थ्य अधिकारियों द्वारा एड्स से संबंधित भाषण या सार्वजनिक बैठकों में चर्चा का आयोजन करके मनाया जाता है।

संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति ने साल 1995 में विश्व एड्स दिवस के लिए एक आधिकारिक घोषणा की, जिसका अनुकरण दुनिया भर में अन्य देशों द्वारा किया गया। एक मोटे अनुमान के मुताबिक, 1981–2007 में करीब 25 लाख लोगों की मृत्यु एचआईवी संक्रमण की वजह से हुई। यहां तक कि कई स्थानों पर एंटीरेट्रोवायरल उपचार का उपयोग करने के बाद भी, 2007 में लगभग 2 लाख लोग इस महामारी रोग से संक्रमित थे।

विश्व एड्स दिवस समारोह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सबसे ज्यादा मान्यता प्राप्त स्वास्थ्य दिन समारोह बन गया है। विश्व एड्स दिवस स्वास्थ्य संगठनों के लिए लोगों के बीच जागरुकता बढ़ाने, इलाज के लिये संभव पहुँच के साथ–साथ रोकथाम के उपायों पर चर्चा करने के लिए महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है।

विश्व एड्स दिवस की पहली बार कल्पना 1987 में अगस्त के महीने में थॉमस नेट्टर और जेम्स डब्ल्यू बन्न द्वारा की गई थी। थॉमस नेट्टर और जेम्स डब्ल्यू बन्न दोनों डब्ल्यू.एच.ओ. (विश्व स्वास्थ्य संगठन) जिनेवा, स्विट्जरलैंड के एड्स ग्लोबल कार्यक्रम के लिए सार्वजनिक सूचना अधिकारी थे। उन्होंने एड्स दिवस का अपना

एचआईवी एड्स पर संयुक्त राष्ट्र कार्यक्रम, जो यूएन एड्स के रूप में भी जाना जाता है, वर्ष 1996 में प्रभाव में आया और दुनिया भर में इसे बढ़ावा देना शुरू कर दिया गया। एक दिन मनाये जाने के बजाय, पूरे वर्ष बेहतर संचार, बीमारी की रोक–थाम और रोग के प्रति जागरूकता के लिये विश्व एड्स अभियान ने एड्स कार्यक्रमों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए वर्ष 1997 में यूएन एड्स शुरु किया।

शुरु के सालों में, विश्व एड्स दिवस के विषयों का ध्यान बच्चों के साथ साथ युवाओं पर केन्द्रित था, जो बाद में एक परिवार के रोग के रूप में पहचाना गया, जिसमें किसी भी आयु वर्ग का कोई भी व्यक्ति एचआईवी से संक्रमित हो सकता है। 2007 के बाद से विश्व एड्स दिवस को व्हाइट हाउस द्वारा एड्स रिबन का एक प्रतिष्ठित प्रतीक देकर शुरू किया गया था।

लोगों में जागरुकता बढ़ाने और उस विशेष वर्ष के विषय के सन्देश को प्रसारित करने के लिये विश्व एड्स दिवस पर विभिन्न प्रकार की क्रियाएँ की जाती हैं। लोगों के बीच में जागरुकता बढ़ाना ही कार्यक्रम का मुख्य लक्ष्य है। कुछ गतिविधियाँ नीचे दी गयी है।

– समुदाय आधारित व्यक्तियों और संगठनों को योजनाबद्ध बैठक के आयोजन के लिये विश्व एड्स दिवस गतिविधियों से जोड़ा जाना चाहिये। ये अच्छी तरह से स्थानीय क्लीनिकों, अस्पतालों, सामाजिक सेवा एजेंसियों, स्कूलों, एड्स वकालत समूहों आदि से शुरू किया जा सकता है।

शेष पृष्ठ 05 पर.....

संपादक की कलम से

Welcome to Happy New Year - 2019

We are very pleased to take this New Year to wish our Tecnia all staff and students. The New Year is a time for looking back and for looking forward. Some Staff make resolutions to break bad habits, create new ones or maintain existing ones. The editorial team of Youngster TIAS also has a resolution it intends to keep: we promise to continue to collect engaging images, videos and photo galleries related to TIAS and to keep you, our dear readers, informed about breaking stories in Tecnia Institute of Advanced Studies and in Tecnia group and communities abroad.

Thanks to you, Youngster TIAS is the most widely-read Hindi-English, language Monthly newspaper dealing with matters related to Tias's students. This year, with your help, we will surpass good. We plan to make 2019 even better! Your feedback, constructive criticism, and, above all, your readership, have proven invaluable in our mission to produce the best Youngster TIAS newspaper possible.

We hope you like the updated look of our Youngster TIAS and that you will continue to enjoy the content we provide. Our editorial staff will continue to work hard to bring you objective and wide-ranging news concerning Youngster TIAS.

Students are be most important assets for Teachers. So, in this new year all students will be grow along with smart and happy. This timeless, simple and crucial is elegantly designe as the perfect informal New Year 2019. The youngster TIAS newspaper makes it easy enough to moral, knowlagble and update. This newspaper gives a good opportunity to all Tecnia Institute of Advanced studies's students, faculties and family, friends, co-workers.

On behalf of the whole Editorial Team, we wish you, your family and friends the very best for the coming year!

पृष्ठ 04 का शेष.....

- बेहतर जागरूकता के लिए वक्ताओं और प्रदर्शकों द्वारा एकल कार्यक्रम या स्वतंत्र कार्यक्रमों का एक अनुक्रम मंचों, रैलियों, स्वास्थ्य मेलों, समुदायिक कार्यक्रमों, विश्वास सेवाओं, परेड, ब्लॉक दलों और आदि के माध्यम से निर्धारित किये जा सकते हैं।
- विश्व एड्स दिवस से मान्यता प्राप्त एजेंसी बोर्ड द्वारा एक सार्वजनिक बयान को प्रस्तुत किया जा सकता है।
- स्कूलों, कार्य स्थलों या सामुदायिक समूहों के लिये लाल रिबन आशा के चिह्न के रुप में पहनना और बाँटना चाहिये। सोशल मीडिया के आउटलेट के लिए इलेक्ट्रॉनिक रिबन भी वितरित किया जा सकता है।

सभी गतिविधियों (जैसे डीवीडी प्रदर्शनियाँ और एड्स की रोकथाम पर सेमिनार) व्यवसायों, स्कूलों, स्वास्थ्य देखभाल संगठनों, पादरी और स्थानीय एजेंसियों को उनके महान काम के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

- किसी सार्वजनिक पार्क में एक कैण्डललाईट परेड आयोजित की जा सकती है या निकटतम एजेंसी में आयोजित गायकों, संगीतकारों, नर्तकों, कवियों, कहानी वक्ताओं और आदि मनोरंजक प्रदर्शन के माध्यम से एड्स की रोकथाम का संदेश दिया जा सकता है।
- विश्व एड्स दिवस के बारे में जानकारी अपनी एजेंसी की वेब साइट को जोड़ने के द्वारा वितरित की जा सकती है।
- सभी की योजनाबद्ध कार्यक्रमों और गतिविधियों को पहले से ही ई–मेल, समाचार पत्र, डाक से या इलेक्ट्रॉनिक बुलेटिन के माध्यम से वितरित किया जाना चाहिए।
- लोगों को एचआईवी एड्स के लिए प्रदर्शनियों, पोस्टर, वीडियो आदि प्रदर्शित करके जागरूक किया जा सकता है।
- विश्व एड्स दिवस की गतिविधियों के बारे में ब्लॉग, फेसबुक, ट्विटर के माध्यम से या अन्य सोशल मीडिया वेबसाइटों के माध्यम से लोगों के एक बड़े समूह को सूचित किया जा सकता है।
- विश्व एड्स दिवस मनाने के लिये अन्य समूह सक्रिय रूप से योगदान कर सकते हैं।
- एक मोमबत्ती की रोशनी के समारोह को एचआईवी/ एड्स के कारण जिन व्यक्तियों का निधन हो गया हो की स्मृति में आयोजित किया जा सकता है।
- धार्मिक नेताओं को एड्स की असहिष्णुता के बारे में कुछ एहसास करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।
- एचआईवी/ एड्स से पीड़ित लोगों को साहचर्य प्रदान करने के लिए भोजन, आवास, परिवहन सेवा शुरू की जा सकती है । उन में नैतिकता को बढ़ाने के लिये सामाजिक कार्य, पूजा या अन्य कार्यों में आमंत्रित किया जा सकता है।

-या.ब्यूरो

Everyday is Human Rights Day

Every so often a thing comes to pass that is of such astounding importance that we must stand up and recognize it. We must place this thing on the pedestal it deserves, and ensure that the precepts and policies put in place by it are adhered to, appreciated, and spread as far as the human voice will carry. Such is the sort of message sent by Human Rights Day.

History of Human Rights Day Human Rights Day was established in 1948, and ever since that auspicious day it has stood as the first major stride forward in ensuring that the rights of every human across the globe are protected. From the most basic human needs such as food, shelter, and water, all the way up to access to free and uncensored information, such has been the goals and ambitions laid out that day.

The Universal Declaration of Human Rights (UDHR) was a shout across the world by the leading countries in the world, stating loud and clear that no matter where we live, what we believe, or how we love, we are each individually deserving of the most basic fundaments of human needs. Every year Human Rights Day marks conferences around the world dedicated to ensuring that these ideals are pursued, and that the basic Human Rights of every person is made a priority in the global theater.

How to Celebrate Human Rights Day The first and foremost way to celebrate Human Rights Day is to take some time to appreciate the effect that this resolution has had on your world and life. Look around your neighborhood and see the effects on a local scale, the charitable works being done to promote the health and well-being of those who are less fortunate.

The next step is to get out there and make a difference, whether it's simply making a donation to one of the dozens of organizations that work towards this global purpose, or organizing a donation drive of your own to help out those organizations fighting the good fight.

Don't think that your gestures have to be grand, simply gathering enough to put together a bunch of care packages of simple needs and necessities and handing them out amongst your local homeless can go a long way to helping to support this cause. The need is large, but is made of limitless minor actions that can lead to a world-wide change in quality of life.

Rahul Mittal

विश्व स्तर के विधिवेत्ता थे डा. भीमराव अम्बेडकर

भारतीय समाज में सामाजिक समता, सामाजिक न्याय, सामाजिक अभिसरण जैसे समाज परिवर्तन के मुददों को उठाने वाले भारतीय संविधान के निर्माता व सामाजिक समरसता के प्रेरक भारतरत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 को महू ,मध्य प्रदेश में हुआ था। इनके पिता रामजी सकपाल व माता भीमाबाई धर्मप्रेमी दम्पति थे। अम्बेडकर का जन्म महार जाति में हुआ था, जो उस समय अस्पृश्य मानी जाती थी। इस कारण उन्हें कदम–कदम पर असमानता और अपमान सहना पड़ता था। सामाजिक समता, सामाजिक न्याय, सामाजिक अभिसरण जैसे समाज परिवर्तन के

मुददों को प्रधानता दिलाने वाले विचारवान नेता थे डॉ. अम्बेडकर। जिस समय उनका जन्म हुआ तथा उनकी शिक्षा दीक्षा का प्रारम्भ हुआ उस समय समाज में इतनी भयंकर असमानता थी कि जिस विद्यालय में वे पढ़ने जाते थे, वहां पर अस्पृश्य बच्चों को एकदम अलग बैठाया जाता था तथा उन पर विद्यालयों के अध्यापक भी कतई ध्यान नहीं देते थे न ही उन्हें कोई सहायता दी जाती थी। उनको कक्षा के अंदर बैठने तक की अनुमति नहीं होती थी साथ ही प्यास लगने पर कोई ऊंची जाति का व्यक्ति ऊंचाई से उनके हाथों पर पानी डालता था, क्योंकि उस समय मान्यता थी कि ऐसा करने से पानी और पात्र दोनों अपवित्र हो जाते थे। एक बार वे बैलगाड़ी में बैठ गये तो उन्हें धक्का देकर उतार दिया गया। वह संस्कृत पढ़ना चाहते थे, लेकिन कोई पढ़ाने को तैयार नहीं हुआ। एक बार वर्षा में वे एक घर की दीवार से लांघकर बौछार से स्वयं को बचाने लगे तो, मकान मालिक ने उन्हें कीचड़ में धकेल दिया था। इतनी कठिनाइयों को झेलने के बाद डॉ. अम्बेडकर ने अपनी शिक्षा पूरी की। गरीबी के कारण उनकी अधिकांश पढ़ाई मिटटी के तेल की ढिबरी में हुई। 1907 में उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास करके बंबई विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया जिसके बाद उनके समाज में प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी। 1923 में वे लंदन से बैरिस्टर की उपाधि लेकर भारत वापस आये और वकालत शुरू की। वे पहले ऐसे अस्पृश्य व्यक्ति बन गये जिन्होंने भारत ही नहीं अपितु विदेशों में भी उच्च शिक्षा ग्रहण करने में सफलता प्राप्त की। उस समय वे भारत के सबसे अधिक पढ़े–लिखे तथा विद्वान नेता थे। डॉ. अम्बडेकर संस्कृत भाषा के प्रबल समर्थक थे।

इसी साल वे बंबई विधानसभा के लिए भी निर्वाचित हुए पर छुआछूत की बीमारी ने उनका पीछा नहीं छोड़ा। 1924 में भीमराव ने निर्धन और निर्बलों के उत्थान हेतु बहिष्कृत हितकारिणी सभा बनायी और संघर्ष का रास्ता अपनाया। 1936 में स्वतंत्र लेबर पार्टी की स्थापना की और 1937 में उनकी पार्टी ने केंद्रीय विधानसभा के चुनावों में 15 सीटें प्राप्त कीं। इसी वर्ष उन्होंने अपनी पुस्तक जाति का विनाश भी प्रकाशित की जो न्यूयार्क में लिखे एक

शेष पृष्ठ 08 पर.....

THIS MONTH

December 15, 1939 - Gone with the Wind had its world premiere in Atlanta, introduced by producer David O. Selznick and featuring appearances by Vivien Leigh and Clark Gable.

*****

December 15, 1943 - The Battle of San Pietro took place during World War II as a German panzer battalion devastated American forces trying to take the 700-year-old Italian village. Hollywood director John Huston, serving as an army lieutenant, filmed the battle and left behind a graphic account.

*****

December 15, 1964 - Canada adopted a new national flag featuring a red maple leaf on a white background.

*****

December 15, 1989 - The dictatorship of General Augusto Pinochet ended in Chile. Pinochet had come to power in 1973 after a military overthrow of the democratically elected government.

*****

December 15, 1995 - European Union leaders announced their new currency would be known as the*Euro*.

*****

Compilation: Honey Shah

BASICS OF MEDIA

Electronic Cinema-A high-definition television camera that has a frame rate of 24 frames per second, which is identical to the frame rate of a film camera. Most electronic cinema cameras use high-quality, state-of-the-art lenses and high-definition viewfinders.

*****

Pixel -Short for picture element. A single imaging element (like the single dot in a newspaper picture) that can be identified by a computer. The more pixels per picture area, the higher the picture quality.

*****

Macro Position- A lens setting that allows it to be focused at very close distances from an object. Used for close-ups of small objects.

*****

Follow Focus -Maintaining the focus of the lens in a shallow depth of field so that the image of an object is continuously kept sharp and clear even when the camera or object moves.

*****

Floor plan: A diagram of scenery and properties drawn onto a grid pattern. Can also refer to floor plan pattern.

*****

Compilation: Rahul Mittal

पृष्ठ 07 का शेष.....

पुस्तक में उन्होंने हिंदू धार्मिक नेताओं और जाति व्यवस्था की जोरदार आलोचना की। उन्होंने अस्पृश्य समुदाय के लोगों को गांधी द्वारा रचित शब्द हरिजन की पुरजोर निंदा की। यह उन्हीं का प्रयास है कि आज यह शब्द पूरी तरह से प्रतिबंधित हो चुका है। उन्होंने अनेक पुस्तकें लिखीं तथा मूकनायक नामक एक पत्र भी निकाला। 1930 में नासिक के कालाराम मंदिर में प्रवेश को लेकर उन्होंने सत्याग्रह और संघर्ष किया। उन्होंने पूछा कि यदि भगवान सबके हैं तो उनके मंदिर में कुछ ही लोगों को प्रवेश क्यों दिया जाता है। अछूत वर्गों के अधिकारों के लिये उन्होंने कई बार कांग्रेस तथा ब्रिटिश शासन से संघर्ष किया।

1941 से 1945 के बीच उन्होंने अत्यधिक संख्या में विवादास्पद पुस्तकें लिखीं और पर्चे प्रकाशित किये। जिसमें 'थॉट आफ पाकिस्तान' भी शामिल है। डॉ. अम्बेडकर ही थे जिन्होंने मुस्लिम लीग द्वारा की जा रही अलग पाकिस्तान की मांग की कड़ी आलोचना व विरोध किया। उन्होंने मुस्लिम महिला समाज में व्याप्त दमनकारी पर्दा प्रथा की भी निंदा की। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद वे रक्षा सलाहकार समिति और वायसराय की कार्यकारी परिषद के लिए श्रम मंत्री के रूप में भी कार्यरत रहे।

भीमराव को विधि मंत्री भी बनाया गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद उन्होंने संविधान निर्माण में महती भूमिका अदा की। 29 अगस्त 1947 को अम्बेडकर को स्वतंत्र भारत के नये संविधान की रचना के लिये बनी संविधान मसौदा समिति के अध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया। संविधान निर्माण के कार्य को कड़ी मेहनत व लगन के साथ उन्होंने पूरा किया और सहयोगियों से सम्मान प्राप्त किया। उन्हीं के प्रयासों के चलते समाज के पिछड़े व कमजोर तबकों के लिये आरक्षण व्यवस्था लागू की गयी लेकिन कुछ शर्तों के साथ। आज के तथा कथित राजनैतिक दल इसका लाभ उठाकर अपनी राजनीति को गलत तरीके से चमकाने में लगे हैं। संविधान में छुआ–छूत को दण्डनीय अपराध घोषित होने के बाद भी उसकी बुराई समाज में बहुत गहराई तक जमी हुई थी जिससे दुखी होकर उन्होंने हिंदू धर्म छोड़ने और बौद्ध धर्म को ग्रहण करने का निर्णय लिया।

यह जानकारी होते ही अनेक मुस्लिम और ईसाई नेता तरह–तरह के प्रलोभनों के साथ उनके पास पहुंचने लगे लेकिन उन्हें लगा कि इन लोगों के पास जाने का मतलब देश द्रोह है। अतः उन्होंने विजयदशमी (14 अक्टूबर 1956) को नागपुर में अपनी पत्नी तथा हजारों अनुयायियों के साथ भारत में जन्मे बौद्धमत को स्वीकार कर लिया। एक प्रकार से डॉ. अम्बेडकर एक महान भारतीय विधिवेत्ता, बहुजन राजनैतिक नेता, बौद्ध पुनरूत्थानवादी होने के साथ–साथ भारतीय संविधन के प्रमुख वास्तुकार भी थे। उन्हें बाबा साहेब के लोकप्रिय नाम से भी जाना जाता है। बाबा साहेब का पूरा जीवन हिंदू धर्म की चतुवर्ण प्रणाली और भारतीय समाज में सर्वव्याप्त जाति व्यवस्था के विरूद्ध संघर्ष में बीता। बाबा साहेब को उनके महान कार्यों के लिए भारतरत्न से भी सम्मानित किया गया। समाज में सामाजिक समरसता के लिए पूरा जीवन लगाने वाले बाबा साहेब का छह दिसम्बर 1956 को देहावसान हो गया। डॉ. अम्बेडकर को अनेकानेक विभूतियों से नवाजा गया। डॉ. अम्बेडकर आधुनिक भारत के निर्माता कहे गये। उन्हें संविधान का निर्माता, शोषित, मजदूर, महिलाओं का मसीहा बताया गया। एक प्रकार से वे महान मानवाधिकारी क्रांतिकारी नेता भी थे। पिछड़ों व वंचित समाज के सबसे प्रतिभाशाली मानव थे। डॉ. अम्बडेकर भारत सशक्तीकरण के प्रतीक बने। आजाद भारत में वे भारत के प्रथम कानून मंत्री तो बने लेकिन उनकी तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरू जी से कभी पटरी नहीं बैठ पायी। वह विश्व स्तर के विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ, समाजशास्त्री, मानवविज्ञानी, संविधानविद, लेखक, दार्शनिक, इतिहासकार और आंदोलनकारी थे। अमेरिका में कोलम्बिया विश्वविद्यालय के 100 टाप विद्वानों में उनका नाम था।

प्रस्तुतिः–
राहुल मित्तल

Vol. 14 **No.** 12
RNI No.: DEL/BIL/2004/14598
Publisher: Ram Kailsah Gupta on behalf of Tecnia Institute of Advanced Studies, 3 PSP, Madhuban Chowk, Rohini, Delhi-85; **Printer:** Ramesh Chander Dogra; **Printed at:** Dogra Printing Press, 17/69, Jhan Singh Nagar, Anand Parbat, New Delhi-5
Editor: Rahul Mittal, responsible for selection of News under PRB Act. All rights reserved.

IMPORTANT QUOTES

"I do not consider it an insult, but rather a compliment to be called an agnostic. I do not pretend to know where many ignorant men are sure -- that is all that agnosticism means."

- Clarence Darrow

*****

"Obstacles are those frightful things you see when you take your eyes off your goal."

- Henry Ford

*****

"I'll sleep when I'm dead."

- Warren Zevon

*****

"There are people in the world so hungry, that God cannot appear to them except in the form of bread."

- Mahatma Gandhi

*****

Compilation: Sanjay Srivastava

WINNERS v/s LOOSERS Part-89

As an outsider, looking in
You might wonder why

*****

Winners have dreams;
Losers have schemes

*****

Winners are a part of the team;
Losers are apart from the team.

*****

Winners see the gain;

losers see pain.

*****

Winners see the potential;
Losers see the past.

*****

To Be Continued In Next Issue-

Compilation: Rahul Mittal

All Students and Faculty are welcome to give any Article, Feature & Write-up along with their Views & Feedback at: **youngstertias@gmail.com**